

देश देशांतर : मोदी की जापान यात्रा (Modi's japan visit)

संदर्भ

टोक्यो में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे के बीच शिखर वार्ता के दौरान कई अहम मामलों पर सहमत बनी। नौसेनाओं के बीच रशियों को और मजबूती प्रदान करने के साथ ही दोनों देशों के वदेश और रक्षा मंत्रियों ने 2 + 2 वार्ता के लिये सहमत जितार्ई। इस अवसर पर दोनों नेताओं ने कषेत्रीय और वैश्विक मसलों पर आपसी सहयोग हेतु वस्तितार से चर्चा की। साथ ही दोनों नेताओं के बीच वार्ता के बाद छह समझौतों पर हस्ताक्षर हुए और 75 अरब डॉलर का करेंसी स्वैप करार हुआ। बैठक के बाद भारतीय नौसेना और जापान मैरीटाइम सेल्फ डेफेंस फोर्स के बीच सहयोग बढ़ाने पर भी समझौता हुआ। जापान ने मुंबई-अहमदाबाद के बीच बुलेट ट्रेन के लिये दूसरे दौर के कर्रज को भी सहमत दे दी है। जापान ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन में शामिल होने का फैसला भी किया है। साथ ही वह भारतीय नागरिकों के लिये वीजा नियमों को उदार करने पर भी सहमत हुआ है। भारत और जापान के प्रधानमंत्रियों के बीच हदि-प्रशांत कषेत्र के मौजूदा हालात पर वस्तितार से चर्चा हुई। प्रधानमंत्री ने बताया कि जापान की कंपनियों ने भारत में 2.5 अरब डॉलर के नए निवेश किये जाने की घोषणा की है। इससे भारत में 30 हजार नौकरियों सृजति होंगी।

पृष्ठभूमि

- कहा जाता है कि जापान और भारत के बीच वनिमिय छठी शताब्दी में तब शुरू हुआ था जब जापान में बौद्ध धर्म का आगमन हुआ था।
- बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय संस्कृति का जापानी संस्कृति पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है और यह जापानी लोगों के भारत के प्रति निकटता की भावना का प्रमुख स्रोत है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1949 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारतीय हाथी को टोक्यो के यूनो चङ्गियाघर को दान दिया था। इससे जापानी लोगों के जीवन में एकआशा की करिण का संचार हुआ जो कि अभी युद्ध में हुई हार से उबर नहीं पाए थे।
- जापान और भारत ने शांति संधि पर हस्ताक्षर कर 28 अप्रैल, 1952 को राजनयिक संबंध स्थापित किये। यह संधि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जापान द्वारा की गई प्रारंभिक शांति संधियों में से एक थी।
- राजनयिक संबंधों की स्थापना के बाद से दोनों देशों ने सौहार्दपूर्ण संबंधों का आनंद लिया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत के लौह अयस्क ने वनिशा की मार झेल रहे जापान को उबरने में काफी मदद की।
- 1957 में जापान के प्रधानमंत्री नोबसुक कशिी की भारत यात्रा के बाद जापान ने 1958 में जापानी सरकार द्वारा वस्तितारति पहली येन ऋण सहायता के रूप में भारत को येन ऋण प्रदान करना शुरू किया।
- अगस्त 2000 में प्रधानमंत्री योशारी मोरी की भारत यात्रा ने जापान-भारत संबंधों को मजबूत करने की दशा को गति प्रदान की।

भारत-जापान : प्रमुख समझौते

- भारत-जापान के बीच वार्षिक द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन जापान में 28, 29 अक्टूबर 2018 को आयोजित किया गया। इससे दोनों देशों के बीच साझेदारी में काफी बदलाव आया है और अब यह 'वशिष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी' बन गई है।
- दोनों पक्ष वैश्विक शांति के कषेत्र में आगे बढ़ने के लिये वदेश मंत्रियों और रक्षा मंत्रियों के बीच 2 + 2 वार्ता के लिये सहमत हुए।
- दोनों देश योग और आयुर्वेद जैसे पारंपरिक औषधीय प्रणाली के कषेत्र में पहली बार सहयोग करेंगे। इससे दोनों देशों में स्वास्थ्य देखभाल हेतु सुवधियों में वृद्धि होगी।
- दोनों देश आयुष्मान भारत योजना और जापानी स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम के लाभ साझा करने पर सहमत हुए हैं।
- एक मलिटिरी लॉजिस्टिक पैकट अधगिरहण और क्रॉस सर्वसिगि समझौते पर दोनों देशों के बीच वार्ता शुरू होगी जो एक-दूसरे के सैन्य अड्डों और नौसैनिक अड्डों तक पहुँच सुनिश्चित करेगा।
- पूर्वोत्तर में बुनयादी ढाँचे के उन्नयन में जापान अधिक महत्त्वपूर्ण निवेश करेगा जो भारत को दक्षिण-पूर्व एशिया से भी जोड़ देगा।
- दोनों देश अफ्रीका समेत भारत-प्रशांत कषेत्र के लोगों को शक्ति, स्वास्थ्य और अन्य सुवधियों तक पहुँच प्रदान के लिये मलिकर काम करेंगे।
- जापान-भारत निवेश संवर्द्धन रोडमैप ने अहमदाबाद में बजिनेस सपोर्ट सेंटर की स्थापना के साथ भारत की मेक इन इंडिया पहल में जापान के योगदान को बढ़ाया है।

भारत के जापान के साथ बढ़ते संबंध और उसका वैश्विक परदृश्य पर असर

- भारत-जापान संबंधों में वृद्धि की संभावनाएँ बहुत अधिक हैं। दोनों देशों के बीच कार्यकषेत्र काफी अधिक है। यह रणनीतिक और मूल्यों पर आधारित है। दोनों देशों ने लोकतंत्र और कानून के शासन का जिक्र किया है।

- यद्यपि अंतरराष्ट्रीय वातावरण, शक्ति संतुलन तथा मेरीटाइम सक्वियोरटी के नज़रिये से देखें तो पाते हैं कि भारत और जापान के संबंध मजबूती से आगे बढ़ रहे हैं। दोनों देश एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ से वे संभावनाएँ तलाश कर उसे धरातल पर उतार सकते हैं।
- दोनों देशों के बीच 6 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए हैं जिनमें एक समझौता हाई स्पीड ट्रेन संचालन के दूसरे चरण को लेकर है। इसके अलावा, डिजिटल पार्टनरशिप, स्वास्थ्य क्षेत्र, खाद्य, नौसेना के क्षेत्र में समझौते हुए हैं।
- जापान की 57 कंपनियाँ भारत में निवेश करने के लिये इच्छुक हैं।
- भारत और जापान के बीच कभी भी रणनीतिक तौर पर अंतर नहीं रहा है लेकिन पिछले चार वर्षों में दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने जिस तरीके से पारस्परिक मतिरता को प्रगाढ़ बनाया है उसका असर वैश्विक रूप से अवश्य पड़ने वाला है।
- अभी तक ऐसा लगता था कि जापान, भारत में निवेश के संबंध में थोड़ा संभलकर चलना चाहता है। हालाँकि वह सामरिक दृष्टि से आगे बढ़ना चाहता था लेकिन वैश्विक पटल पर दोनों देशों के बीच नई चीजें निकलकर आ रही हैं।
- अमेरिका की अमेरिका फ्रंट नीति एशिया में उत्तर कोरिया के परमाणु कार्यक्रम से है। इसके तहत वह सरिफ चीन के ऊपर दबाव नहीं डाल रहा है बल्कि जापान के मतिर देशों जिनमें भारत भी शामिल है पर दबाव पड़ रहा है।
- इन देशों पर तरह-तरह के वीजा प्रतिबंध भी लगाए जा रहे हैं। टैरिफ आदि को भी हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है और अमेरिका द्वारा उन पर दबाव डाला जा रहा है कि किसी और देश से सामरिक संबंध न बनाएँ।
- ऐसे में यह आवश्यक है कि एशिया के मतिर देश आपस में मलिकर एशियाई भावना को जगाएँ तथा अमेरिका एवं अन्य देशों के दबाव में न आएँ।
- एशिया में अगर भारत को आगे बढ़ना है तो एशिया-पैसिफिक अवधारणा को व्यावहारिक तौर पर अमल में लाना बहुत ज़रूरी है।

भारत-जापान संबंध

- जापान-इंडिया एसोसिएशन की स्थापना 1903 में हुई थी और यह जापान में सबसे पुरानी अंतरराष्ट्रीय फ़रेंडशिप संस्थाओं में से एक है।
- चूँकि 13वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन में जापान ने 2014 में मोदी-एबे के बीच हुई बैठक के बाद सरकारी और नज्दी क्षेत्र में निवेश को 33,800 करोड़ रुपए करने का वचन दिया था।
- जापान, भारत में निवेश के सबसे बड़े स्रोतों में से एक रहा है। अप्रैल 2000 और जून 2018 के बीच एफडीआई में 28.16 बिलियन डॉलर का व्यापार काफी कम है। इसे बढ़ाए जाने की आवश्यकता है।
- भारत द्वारा नरियात किये जाने वाले देशों की सूची में जापान काफी नीचे अर्थात् 18वें स्थान पर है जबकि भारत में आयात करने वाले देशों की सूची में जापान 12वें स्थान पर है।
- व्यापार की यह स्थिति द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि को आसान बनाने के लिये 2011 में दोनों देशों द्वारा व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (CEPA) पर हस्ताक्षर किये जाने बावजूद है।
- CEPA को भारत द्वारा किये गए सभी समझौतों में सबसे व्यापक रूप में वर्णित किया गया था जिसमें वस्तुओं और सेवाओं में व्यापार, व्यक्तियों का आवागमन, निवेश, बौद्धिक संपदा अधिकार, सीमा शुल्क प्रक्रियाएँ तथा अन्य व्यापार संबंधी मुद्दे शामिल थे।
- CEPA में 10 वर्षों की अवधि में भारत और जापान के बीच कारोबार किये जाने वाले 94% से अधिक वस्तुओं पर टैरिफ को खत्म करने की परिकल्पना की गई है।
- वित्त वर्ष 2018 में भारत द्वारा जापान को किये गया नरियात वर्ष 2015 की तुलना में कम है। नरियात की जाने वाली प्राथमिक वस्तुओं में पेट्रोलियम उत्पाद, रसायन, यौगिक, गैर-धातु खनिज के बरतन, मछली, धातुकर्म अयस्क और स्करैप, कपड़े और सहायक उपकरण, लौह तथा इस्पात उत्पाद, कपड़ा, धागा और मशीनरी शामिल हैं।
- जापान से भारत का प्राथमिक आयात जिनमें अभी सुस्ती दिखाई दे रही है उनमें मशीनरी, परिवहन उपकरण, लौह और इस्पात, इलेक्ट्रॉनिक सामान, जैविक रसायन, मशीन टूलस इत्यादि शामिल हैं।
- अधिकांश जापानी एफडीआई प्रवाह ऑटोमोबाइल, वदियुत उपकरण, दूरसंचार, रसायन और फार्मा सेक्टर में केंद्रित हैं।
- औद्योगिक नीति और संवर्द्धन विभाग (DIPP) के आँकड़ों के अनुसार, अक्टूबर 2016 तक भारत में 1,305 जापानी कंपनियों पंजीकृत थीं जो अक्टूबर 2015 के 1,229 की तुलना में 76 कंपनियों की वृद्धि (6% की वृद्धि) को दर्शाता है।
- भारत की मजबूती में जापान की अभिप्रेक्षा दिखाई दे रही है। अतः इसे और मजबूती प्रदान किये जाने की आवश्यकता है।
- जैसा कि भारत में रेलवे, साइबर कंपनियों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लाने की बात की गई है और भारत चौथी औद्योगिक क्रांति की ओर अग्रसर है, उसे देखते हुए भारत और जापान को आपस में मलिकर कार्य करना चाहिये।

सामरिक नज़रिये से कतिने अहम हैं समझौते?

- मोदी सरकार के आने के बाद दोनों देशों के संबंध लगातार बढ़ रहे हैं। लॉजिस्टिक मॉटेनेंस में बलिकुल वैसा ही हुआ है जैसा भारत और अमेरिका के बीच हुआ। इसका अर्थ यह है कि हमारी नेवी और जापान की नेवी आपस में सुवधियों का इस्तेमाल कर सकती हैं।
- आज जापान जो सैन्य शक्ति तथा क्षेत्रीय उत्कृष्टता दिखा रहा है उसको काउंटर करने के लिये भारत और जापान के बीच आपसी सहयोग ज़रूरी है और यह अच्छी बात है कि दोनों देश आपस में सहयोग की भावना से आगे बढ़ रहे हैं।
- सामरिक स्तर पर गहन बातचीत के साथ-साथ रक्षा और आर्थिक क्षेत्र में सहयोग भी आज की दुनिया में द्विपक्षीय संबंधों का एक प्रमुख और नरिणायक कारक है। इस संदर्भ में इन दो एशियाई ताकतों के बीच सामरिक रिश्ते बेहतर करने में सामुद्रिक क्षेत्र महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।
- दोनों देशों के पास इस क्षेत्र में सहयोग करने की दुनिया में सबसे ज़्यादा संभावना है। संबंधों में इस तरह का तालमेल हासिल करने के बाद दोनों देश अब सैन्य सहयोग बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं।
- दोनों देश गहरे सामुद्रिक हति, सैन्य उपकरण तथा तकनीक के क्षेत्र में भावी सहयोग को लेकर वचिार-वमिर्श की प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहे हैं।
- इस कारण जापान के समुद्री आत्म रक्षा बल (JMSDF) और भारतीय नौसेना (IN) के बीच द्विपक्षीय अभ्यास का उद्देश्य भी समझ में आता है।
- भारत, अमेरिका और जापान के बीच मालाबार में 2015 से संयुक्त नौसैनिक अभ्यास किया जा रहा है। यह भी भारत-प्रशांत क्षेत्र में वर्तमान सुरक्षा माहौल को लेकर भारत के बदलते दृष्टिकोण को दर्शाता है।
- जापान ने जून 2018 में त्रिपक्षीय मालाबार अभ्यास में हसिसा लिया था जिसमें तीसरा देश अमेरिका है। मौजूदा सुरक्षा हालात में एक देश की सेना को दूसरे देश की सेना के साथ मलिकर काम करना होगा जो हदि महासागर-पेसिफिक सागर की सामरिक स्थिति में सहयोग की नई दिशा को तय करेगा।

- भारत-जापान प्रशांत क्षेत्र के दो प्रमुख सामुद्रिक देश होने के कारण सामुद्रिक सुरक्षा सहयोग का स्वाभाविक क्षेत्र है।
- दोनों ही देश हृदि महासागर एवं प्रशांत महासागर के कुछ इलाकों और विवादित पूर्वी वयितनाम सागर में व्यापारिक और नौसैनिक जहाजों की आवाजाही को लेकर आँकड़ों को आपस में साझा करने के समर्थक रहे हैं।
- इस दशा में अच्छी बात यह है कि दोनों देशों के बीच सैन्य अभ्यास दिसंबर 2018 में मज़ोरम में होने वाला है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को जापान ने हमेशा ही भारत और एशिया के लिये महत्त्वपूर्ण माना है। यह भारत की एकट ईस्ट पालिसी और जापान की इंडो-ओरिएंटेड पालिसी के लिये ज़बरदस्त पहल होगी।
- टेक्नोलॉजी में जापान का कोई मुकाबला नहीं है। भारत ने जापान के सबमरीन के बारे में रुचि दिखाई है तथा इस संबंध में दोनों देशों के बीच बातचीत भी हुई है। जापान का सबमरीन अत्याधुनिक है। भारत ने एमफीबियन एयरक्राफ्ट में भी रुचि दिखाई है।
- दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार भारत के लिये बेहतर साबित होगा।

बगि-टिकट इन्वेस्टमेंट

- जापान 1958 से द्विपक्षीय ऋण और भारत को सहायता प्रदान कर रहा है साथ ही यह सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता (Bilateral Donor) भी है।
- जापानी आधिकारिक विकास सहायता (Japan's official development assistance-ODA) बजिली, परिवहन, पर्यावरण परियोजनाओं और बुनियादी मानव ज़रूरतों से संबंधित परियोजनाओं जैसे क्षेत्रों में भारत के विकास का समर्थन करता है।
- पछिले पाँच सालों में भारत में जापान द्वारा नविश किये गए फंडों में से 90 अरब डॉलर का नविश दल्लि-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर के लिये किया गया है। यह कॉरिडोर 1,483 किलोमीटर उच्च गतिवाली रेल और सड़क मार्ग के साथ नए कस्बों, औद्योगिक पार्कों, बंदरगाहों और हवाई अड्डों से होकर गुज़रेगा जो कि इन दोनों शहरों के बीच विकसित किया जा रहा है।
- जापान मुंबई-अहमदाबाद के बीच हाई स्पीड रेल (बुलेट ट्रेन) सेवा का भी समर्थन कर रहा है और इसके लिये उसने 5,500 करोड़ रुपए की पहली कश्ति जारी की है।
- एक समरपति फ्रेट कॉरिडोर पर भी चर्चा हुई है जो करीब 50,000 करोड़ रुपए की परियोजना है और जिसमें जापानी सहायता 38,000 करोड़ रुपए है।
- न्यू एटली से न्यू फुलेरा स्टेशनों तक 190 कमी. का पहला खंड पश्चिमी समरपति फ्रेट कॉरिडोर पर खोला गया है, जबकि रेवाड़ी और मारवार के बीच 492 किलोमीटर का अगला खंड अगले वर्ष की शुरुआत में खुलने की संभावना है। मार्च 2020 तक इस कार्य को समाप्त करने का लक्ष्य रखा गया है।

भारत-जापान के बीच जुड़ाव के नए क्षेत्र

- मार्च 2018 में 'कूल ईएमएस सर्विस' (cool EMS service) शुरू की गई थी जिसके अंतर्गत भारतीय नयियों के तहत अनुमत जापानी खाद्य वस्तुओं को डाक चैनलों के माध्यम से जापान से भारत में ठंडे बक्से (cool boxes) में ले जाया जाता है। वर्तमान में यह सेवा केवल दल्लि में उपलब्ध है।
- दोनों पक्ष डिजिटल साझेदारी को गति देने का प्रयास कर रहे हैं, नीति आयोग भारत की ओर से नोडल प्वाइंट और जापान की ओर से अर्थव्यवस्था, व्यापार और उद्योग मंत्रालय इसमें अपनी भूमिका निभा रहा है।
- संभावित सहयोग के क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) तथा बगि डेटा शामिल है।
- एक अन्य नया क्षेत्र जहाँ भारत के आगे बढ़ने की संभावना है वह है आयुष्मान भारत परियोजना और एशिया स्वास्थ्य और कल्याण पहल नामक जापानी कार्यक्रम जो एकजुटता या एकीकरण के लिये है जिसमें चिकित्सा उपकरण और अस्पतालों जैसे क्षेत्रों में जापान की ताकत का लाभ उठाना शामिल है।

चीन के लिये चुनौती

- डोकलाम विवाद के बाद से भारत के लिये जापान का नरिंतर सहयोग बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। शजिओ आबे पछिले हफ्ते ही चीन यात्रा से लौटे हैं।
- ऐसे में भारत और जापान के नेताओं के बीच यह मुलाकात चीन के रुख को भी समझने में सहायक होगी।
- अगर दोनों देश मलिकर चीन से बातचीत करें, तो यह अधिक प्रभावशाली कदम हो सकता है। यदि दोनों देश एशिया प्रशांत क्षेत्र में सामरिक सहयोग करते हैं तो यह चीन के लिये चुनौती पेश कर सकता है।
- चीन की बेल्ट रोड पहल से काफी देश बाहर निकल रहे हैं। उनमें पता है कि यह बैड ट्रैप है और चीन अपने फायदे के लिये आता है, बज़िनेस मकसद से आता है। उसका मकसद दूसरे देशों का आर्थिक रूप से विकास करना कतई नहीं है।
- भारत और जापान दूसरे देशों को विकल्प दे रहे हैं। दोनों समावेशी विकास की बात कर रहे हैं। उनका कोई एजेंडा नहीं है जो एक साथ विकास करने हेतु महत्त्वपूर्ण है।

नभिकर्ष

आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में सहयोग के मामले में जापान भारत का सबसे भरोसेमंद साझीदार रहा है। इन दिनों जिस प्रकार की वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिति है, उसमें दोनों देशों का साथ बहुत महत्त्वपूर्ण है। खासकर एशिया पैसिफिक क्षेत्र में ताकतवर बने रहने के लिये भी दोनों देशों की साझेदारी महत्त्वपूर्ण है। एशिया प्रशांत क्षेत्र में तीन देश महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं-भारत, जापान और चीन। चीन से भारत और जापान की दूरी है। वह अपनी वसितारवादी नीतियों पर कायम है। ऐसे में एशिया प्रशांत क्षेत्र में अपनी ताकत बढ़ाने के लिये भारत और जापान के बीच आर्थिक सहयोग बहुत ज़रूरी है। इस शखिर वार्ता में दोनों देशों के नेताओं ने एशिया प्रशांत क्षेत्र में सहयोग पर ही प्रमुख रूप से ध्यान केंद्रित किया।

भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ मलिकर एक मज़बूत आर्थिक क्षेत्र विकसित करने में जुटा हुआ है। पाकिस्तान की मनमानी के चलते उसे सार्क देशों से अलग-थलग कर दिया गया है, पर भारत अन्य देशों श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल में जापान के साथ मलिकर नविश करने की रणनीति तैयार कर रहा है। इस यात्रा से उसे भी गति मिली है। दोनों देशों के नेताओं की ताज़ा मुलाकात से न सिर्फ आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में परस्पर सहयोग को गति मिलेगी, बल्कि वैश्विक रणनीति में भी मज़बूती आएगी।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/modi-visit-to-japan>

